Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

व्यवसाय चिन्तन की ज्योतिषीय अवधारणा

प्रभाकर शर्मा
शोध छात्र, संस्कृत,
डॉ. मनीश खैमरिया
मार्गदर्शक, प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष संस्कृत,
एम.एल.बी. कॉलेज, ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 79-84
Publication Issue :
January-February-2021
Article History
Accepted : 10 Jan 2021
Published : 20 Jan 2021

सरांश
चन्द्र हो तो शंख, मोती, प्रवाल आदि पदार्थो के व्यापार से, मिट्टी के खिलौने सीमेण्ट चूना बालू ईट आदि के व्यापार से, खेती शराब की दुकान, तेल की दुकान एवं वस्त्र की दुकान से जीविका करता है। मंगल हो तो मेनसिल, हरताल, सुरभाप्रभृति पदार्थो के व्यापार से बन्दूक, तोप, तलवार के व्यापार से या सैनिक वृत्ति से, सुनार लुहार, बढ़ई खटीक आदि के पेशे द्वारा एवं बिजली के कारखाने में नौकरी करके अथवा मशीनरी के कार्य द्वारा जातक आजीविका उत्पन्न करता है।

मुख्य शब्द – व्यवसाय, चिन्तन, ज्योतिष, ग्रह।

आजीविका विचार– तृतीय स्थान से आजीविका का भी विचार किया जाता है। कतिपय आचार्यो का मत है कि लग्न, चन्द्रमा और सूर्य इन तीनों ग्रहों में से जो अधिक बलवान् हो, उससे दसवें स्थान के नवांशाधिपति के स्वरूप, गुण, धर्मानुसार आजीविका ज्ञात करनी चाहिए।

विचार करने पर दसवें स्थान का नवांशधिपति सूर्य हो तो डॉक्टरी, वैद्यक से या दवाओं के व्यापार से एवं सोना, मोती, ऊनी वस्त्र, घी, गुड़ चीनी आदि वस्तुओं के व्यापार से जातक अजीविका करता है। ज्योतिष में एक मत यह भी है कि जातक घास, लकड़ी और अनाज का व्यापारी भी उपर्युक्त योग होने से होता है। मुकदमा लड़ने में इसकी अभिरूचि अधिक रहती हैं

चन्द्र हो तो शंख, मोती, प्रवाल आदि पदार्थो के व्यापार से, मिट्टी के खिलौने सीमेण्ट चूना बालू ईट आदि के व्यापार से, खेती शराब की दुकान, तेल की दुकान एवं वस्त्र की दुकान से जीविका करता है।

मंगल हो तो मेनसिल, हरताल, सुरभाप्रभृति पदार्थो के व्यापार से बन्दूक, तोप, तलवार के व्यापार से या सैनिक वृत्ति से, सुनार लुहार, बढ़ई खटीक आदि के पेशे द्वारा एवं बिजली के कारखाने में नौकरी करके अथवा मशीनरी के कार्य द्वारा जातक आजीविका उत्पन्न करता है।[1]

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

बुध हो तो क्लर्क, लेखक, कवि, चित्रकार, जिल्दसाज, शिक्षक, ज्योतिषी, पुस्तक विक्रेता यन्त्र निर्माणकर्ता, सम्पादक, संशोधक, अनुवादक और वकील के पेशे द्वारा जातक आजीविका करता है। मतान्तर से साबुन, अगरबत्ती, पुष्प मालाएँ कागज के खिलौने आदि बनाने के कार्यो द्वारा जातक आजीविका अर्जन करता है।

गुरू हो तो शिक्षक, अनुष्ठान करनेवाला, धर्मोपदेशक, प्रोफेसर, न्यायाधीश, वकील, आदि के व्यवसाय द्वारा जातक आजीविका करता है, लवण, सुवर्ण एवं पदार्थो का व्यापारी भी हो सकता है। किसी–किसी का मत है कि हाथी, घोड़ो का व्यापार भी यह जातक करता है।

शुक्र हो तो चाँदी, लोहा, सोना, गाय, भैंस, हाथी घोड़ा, दूध, दही, गुड, आलंकारिक वस्तुएँ सुगन्धित चीजें, हीरा, माणिक्य आदि मणियों के व्यापार से जातक आजीविका करता है। मतान्तर से सिनेमा, नाटक आदि में पार्ट खेलने और शराब के व्यापार से भी जातक आजीविका करता है।

शनि हो तो चररासी, पोस्टमैन, हलकारा तथा जिनको रास्ते में चलना–फिरना पड़े वैसा काम करनेवाला. चोरी, हिंसा, नौकरी आदि द्वारा पेशा करने वाला, प्रेस, खेती, बागवानी मन्दिर में नौकरी और दूत का कार्य करना प्रभूति कामों से आजीविका करनेवाला जातक होता है। कुछ लोग दशम स्थान की राशि के स्वभावनुसार आजीविका निर्णय करते है।

नवम भाव विचार – नवम से भाग्य और धर्म–कर्म के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। भाग्येश के बल्वान होने से जातक भाग्यषाली होता है। यदि भाग्य–भवन पर अनेक ग्रहों की दृष्टि हो तो भाग्योदय के समय अनेक व्यक्तियों की सहायता लेनी पड़ती है। भाग्येश 6,8,12 वें भाव में शत्रुगृह में बैंठा हो तो भाग्य उत्तम नहीं होता है। भाग्यस्थान में लाभेश बैठा हो तो नौकरी का योग होता है। धनेश लाभ में गया हो और दशमेश से युत या दृष्ट हो तो भाग्यवान् हेता है। लाभेश नौवें भाव में हो और दशमेश से युत या दृष्ट हो तो भाग्यवान् होता है। लाभेश नवम भाव में, धनेश लाभ भाव में, नवमेश धन भाव में हो और दशेमश से युत या दृष्ट हो तो महाभाग्यवान् होता है। नवम भाव गुरू और श्रुक से युत, दृष्ट हो या भाग्येश, गुरू, शुक्र से युत हो या लग्नेश और धनेश पंचम में स्थित हों अथवा नवम भाव में हों; नवमेश लग्न में गया हो तो जातक भाग्यवान् होता है।[2]

भाग्योदय काल– सप्तमेश या शुक्र 3,6,7,10,11 वें स्थान में हो तो विवाह के बाद भग्योदय होता है। भाग्येश रवि हो तो 22 वें वर्ष में, चन्द्र हो तो 24 वें वर्ष में, मंगल हो तो वें वर्ष में, बुध हो तो 28वें वर्ष में; गुरू हो तो 32 वें बर्ष में;शुक्र हो तो वें वर्ष में; शनि हो तो 16 वे बर्ष में और राहु हो तो 36 वें बर्ष 42में भाग्योदय होता है।[3]

नवम भाव का दृष्टि फल –

1. नवम भाव में गुरू या शूक्र स्थित हो तो मन्त्री, शासनकर्ता में सहयोग या विचार–परामर्श देनेवाला, कौन्सिल का मेम्बर, पार्लमेण्ट–सेक्रेटरी और प्रधान न्यायाधीश का पेशकर होता है पर इस योग में ध्यान देने की एक बात यह है कि यह फल गुरू या शुक्र के उच्च राशि के उच्च राशि में रहने पर ही घटता है। नवम भाव पर शुभग्रह की दृष्टि भी अपेक्षित है।

2. नवमस्थ गुरू को सूर्य हो देखता हो तो राजा के समान, धारासभाओं को सदस्य, जनता का प्रतिनिधि; चन्द्र देखता हो तो **विलासी**, सुन्दरदेही; मंगल देखता हो तो कांचन, हिरण्य आदि मूल्यवान् धातुओंवाला; बुध देखता हो तो धनी, शुक्र देखता हो ता पशु, धन–धान्यादि सम्पत्ति से युक्त, शनि देखता हो ता चल–अचल आदि सम्पत्ति का स्वामी होता है।
3. **गुरू को सूर्य–** मंगल देखते हों तो ऐश्वर्य, रत्न, स्वर्ण आदि सम्पत्ति से युक्त, साहसी, धीर–वीर , पराक्रमी और बड़े परिवारवाला होता है; सूर्य–बुध देखते हों तो सुन्दर, भाग्यवान्, सुन्दर स्त्री का पति, धनी, कवि, लेखक, संशोधक, **सम्पादक** और विद्वान् होता है; सूर्य–शुक्र देखते हो तो उद्यमी, कलाविद्, यशस्वी, सुरूचिसम्पन्न, सुखी और नम्र होता है; सूर्य–शनि नवमस्थ गुरू को देखते हों तो नेता, प्रतिनिध, कोषाध्यक्ष, प्रख्यात, मजिस्ट्रेट, न्यायाधीश और संग्रहकर्ता होता है; चन्द्र–मंगल देखते हों तो सेनापति, कीर्तिवान्, धारासभा का सदस्य, मन्त्री, सुखी, भाग्यवान्, चतुर और मान्य; चन्द्र–बुध देखते हों तो उत्तम सुख प्राप्त करनेवाला, तेजस्वी, क्षमावान्, विद्वान्, कवि, कहानीकार और संगीतप्रिय; चन्द्र–शुक देखते हों तो अभिमानी, प्रवासी, मध्यावस्था में सुखी, अन्तिम जीवन में दुखी और कष्ट प्राप्त करनेवाला; मंगल–बुध देखते हों तो चतुर, सुशील, गायक ,भूमिपति, विद्या द्वारा यशोपार्जन करनेवाला, प्रतिज्ञा पूर्ण करनेवाला और मान्य; मंगल–शुक्र देखते हों तो धनिक, विद्वान्, विदेश, जानेवाला, तेजस्वी, सात्त्विक,चतुर, लब्धप्रतिष्ठ और शासन करनेवाला; मंगल–शनि देखते हों तो नीच, पिशुन, द्वेषी, विदेश–यात्रा करनेवाला, नीच प्रकृति, धन–धान्य से परिपूर्ण होता है।
4. नवम भाव एंव बृहस्पति से भाग्य प्रभाव, गुरू, धर्म, तप और शुभ का विचार किया जाता है। नवमेश ओर बृहस्पति शुभ वर्ग में हों, भाग्य भाव शुभग्रह से युक्त हो तो जातक भाग्यवान् होता है।
5. यदि पापग्रह, नीचराशिस्थ ग्रह या अस्तग्रह नवम भाव में हों तो जातक यश, धर्म और धन से हीन रहता है। पापग्रह भी यदि उच्च स्थान में मित्रगृह में होकर नवम में स्थित हो तो मनुष्य निरन्तर भाग्यवान् होता है।4

शुक्र हो तो स्त्री से, शनि हो तो सेवक से धन प्राप्त होता है। यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों से दशम भाव में ग्रह हो तो अपनी–अपनी दशा में दोनों फल देते हैं। लगन, चन्द्रमा इन दोनों में जो बली हो उससे दशम भाव का स्वामी जहाँ स्थित हो उस नवांशपति से आजीविका कहनी चाहिए। लग्न या चन्द्रमा से दशम स्थान का स्ववामी सूर्य नवांश में हो तो औषध, अन्न, तृण, धान्य, सोना, मुक्ता आदि के व्यापार से आजीविका कहनी चाहिए।

लग्न या चन्द्रमा से दशमेश, मंगल के नवांश में हो तो सोना, चाँदी, ताँथा, पीपल, आदि के व्यापार से तथा कोयला एवं राख के व्यापार से धन लाभ होता है।

लग्न या चन्द्रमा से दशमेश बुध के नवांश में हो तो शिल्प, काव्य, पुराण, ज्योतिष आदि के द्वारा आजीविका सम्पादित होता है।

लग्न या चन्द्रमा से दशमेश गुरू के नवांश में हो तो जातक, शिक्षक, प्राध्यापक, पुराणवेत्ता एवं धर्मोपदेशक होता है।
लग्न या चन्द्रमा से दशमेश गुरू के नवांश में हो तो सुवर्ण, मणि, गज, अश्व, गौ, गुड़, चावल, नमक आदि के व्यापार से लाभ होता है।

लग्न या चल्द्रमा से दशमेश, शनि ने नवांश में हो तो निन्दित मार्ग से आजीविका स्पन्न होती है।

चन्द्रमा से दशम में मंगल–बुध से युक्त हो तो शास्त्रोपीवी, गुरू से युक्त हो तो नीचों का स्वामी, शुक्र से युक्त हो तो विदेश से व्यापार करनेवाला, शनि से युक्त हो तो साहस एक आजीविका कारक होगा

चन्द्रमा से दशम भाव में बुध, शुक्र हों तो विद्या, स़ी एवं धन से युक्त, शनि से युक्त हो तो पुस्तक–लेखन, बृहस्पति, शुक्र से युक्त हो तो समृद्ध, शनि से युक्त हो तो दृढ़ संकल्पी एवं कलाकर होता है।

एकादश भाव विचार – लाभ भाव में शुभग्रह हों तो न्यायमार्ग से धन का लाभ और पापग्रह हों तो अन्याय मार्ग से धन का लाभ होता है तथा शुभ और अशुभ दोनों प्रकार से ग्रह लाभ भाव में हो तो न्याय, अन्याय मिश्रित मार्ग से धन आता है।[5]

लाभ भाव पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो लाभ और पापग्रहों की दृष्टी हो तो हानि होती है। लाभेश 1 ।4 ।5 ।7 ।9 ।10 भावों में हो तो धन का बहुत लाभ होता है।

लाभेश शुभग्रह से सम्बन्ध करता हो तो लाभ होता है।

यद्यपि ससुराल से धन प्राप्त करने के दो–तीन योग पहले भी लिखे गये हैं; किन्तु ग्यारहवें भाव के विचार में इन योगों पर कुछ विचार कर लेना आवश्यक है। निम्न योग अनुभवसिद्ध हैः

- ✓ सप्तम और चतुर्थ स्थान का स्वामी एक ही ग्रह हो तथा वह ग्रह इन्हीं दोनों भावों में से किसी भाव में हो।
- ✓ जायेश कुटुम्ब स्थान में और कुटुम्बेश जाया स्थान में हो।
- ✓ जायेश और कुटुम्बेश दोनों ग्रह सप्तम में अथवा कुटुम्ब स्थान में एकत्र हों।
- ✓ जायेश और कुटुम्बेश दोनों ग्रह 1 । 4 ।5 ।7 ।9 ।10 ।11 वें भाव में हों या चन्द्र से वें अथवा चतुर्थ स्थान में एकत्रित हों।
- ✓ धनेश व लाभेश यदि लग्नेश के मित्र हों तो जातक को अच्छी आमदनी होती है।
- ✓ सूर्य या चन्द्रमा लाभेश हो तो राजा के सदृश धनवान् के आश्रम से, मंगल लाभेश हो तो मन्त्री के आश्रय से, बुध लाभेश हो तो विद्या द्वारा, बृहस्पति लाभेश हो तो आचार द्वारा, शुक्र लाभेश हो तो पशुओं के व्यापार द्वारा और शनि लाभेश हो तो खर कर्म द्वारा धनलाभ होता है।

6. नवम भाव यदि अपने स्वामी या शुभग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली होता हैं। भाग्येश जिस राशि में हो उसका स्वामी भी भाग्यफलकर्ता होता हैं। नवभेश ग्रह भाग्य का परिचायक और भाग्य से पंचमेश अर्थात् लग्नेश भाग्य का बोधक होता हैं। यदि ये सभी ग्रह अपने–अपने उच्च या सुगृह के राशि में हों तो जातक सदा भाग्यशाली रहता हैं।
7. यदि चार बली ग्रह अपने उच्च तथा नवांश में स्थित होकर भाग्यस्थान में हों तो जातक भाग्यशाली होता हैं। और उसे सभी प्रकार की सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं।
8. भाग्यस्थान–नवम भाव अपने स्वामी या शुभग्रह से युत या दृष्ट हो तो जातक भाग्यवान् होता हैं।

9. नवम भागवत गुरू यदिद सूर्य के द्वारा दृष्ट हो तो जातक राजा, मंगल, द्वारा दृष्ट हो तो मन्त्री, बुध द्वारा दृष्ट हो तो सुखी होता हैं।
10. नवम भाव में स्थित गुरू को चन्द्रमा और सूर्य देखते हों तो जातक पण्डित एवं धनी होता हैं। मंगल और सूर्य देखते हों तो वाहन, रत्न आदि सम्पत्ति से युक्त होता हैं। सूर्य और बुध देखते हों तो धनिक एवं सूर्य और शुक्र द्वारा दृष्ट होने पर धन–सम्पत्ति की प्राप्ति होती हैं।
11. नवम भाव में सूर्य एवं बुध स्थित हों तो जातक दु,खी, रोगी, पीड़ित चन्द्रमा और बुध हों तो जातक चतुर, शास्त्रज्ञ, चन्द्रमा और गुरू हों तो जातक धीर बुद्धि, श्रीमान् भाग्यशाली, चन्द्रमा और शुक्र हों तो साधारण भाग्यवान् एवं चन्द्रमा और शनि हों तो दुखी और निर्धन होता हैं। नवम भाव में मंगल और बुध हों तो जातक भोगी, सुखी एवं सम्पन्न, मंगल और बृहस्पति, हों तो धनवान्, पूज्य, मंगल और शुक्र हों तो दो स्त्रियों का पति, परदेशवासी, भाग्यशाली, मंगल और शनि हों तो परस्त्रीगामी, धनिक एवं नीच विचारयुक्त तथा बुध और गुरू हों तो चतुर बुद्धि, विद्वान, धनी और ज्ञानी होता हैं। नवम भाव में बुध और शुक्र हों तो जातक बुद्धिमान, रतिप्रिय, एवं पण्डित, बुध–शनि हों तो रोगी, धनवान् एवं मिथ्यावादी, बृहस्पति–शुक्र हो तो श्रीमान् धनिक एवं दीर्धलीवी, शनि और गुरू हों तो धववान् और रोगी एवं शुक्र–शनि हों तो अधिक समृद्धिशाली होता हैं।
12. नवम भाव में सूर्य, चन्द्र और मंगल हों तो जातक के शरीर में धाब, माता–पिताहीन, सामान्यतया धनिकः सूर्य चन्द्र और गुरू हों तो सुखी, वाहन परिपूर्ण एवं समृद्ध, सूर्य, चन्द्र और शुक्र हों तो झगड़ालू, निर्धन एवं व्यापार में धन नाश करनेवाला, सूर्य, चन्द्र और शनि हों तो दूसरे की नौकरी करनेवाला, साधारण भाग्यशाली एवं श्रेष्ठ व्यक्तियों से विरोध करनेवाला, सूर्य, मंगल, बुध हों तो सुन्दर, क्रोधी एवं विवादप्रिय, सूर्य, मंगल एवं गुरू हों तो लोकप्रिय, धनिक एवं भाग्यशाली, सूर्य, मंगल, और शुक्र, हों तो क्रोधी, स्त्रियों से झगड़नेवाला एवं निर्धन, सूर्य, मंगल और शनि हों तो बन्धुहीन, साधु एवं पितृहीन, सूर्य, बुध और गुरू हों तो यशस्वी एवं धनिक एवं धनिक, सूर्य, बुध और शुक्र हों तो राजा के समान वैभवशाली तथा सूर्य, बुध और शनि हों तो परस्त्रीगामी एवं धनिक होता हैं।

नवम भाव में सूर्य, बृहस्पति और शुक्र हों तो जातक परस्त्रीरत, धनी एवं पण्डित होता हैं। सूर्य, बृहस्पति और शनि हों तो धूर्तराज, सूर्य और शनि हों तो निगुर्ण एवं राजा से दण्डित, चन्द्र, मंगल और बुध हों तो जातक बाल्यावस्था में दुखी युवावस्था में सुखी, चन्द्र, मंगल, गुरू हों तो कृपण एवं मातृहीन, चन्द्र, बुध और बृहस्पति हों तो विद्वान धनी एवं पराक्रमी, चन्द्र बुध और शुक्र हों तो पराक्रमी एवं धनिक, चन्द्र, बुध और शनि हों तो जातक पापी, विवादप्रिय एवं बुद्धियुक्त, चन्द्र, गुरू और शुक्र हों तो राजा के समान समृद्धिशाली, चन्द्र, गुरू और शनि हों तो सद्गुणी एवं कर्मशील, शनि, बुध और शुक्र हों तो राजा के तुल्य एवं धनिक, बृहस्पति, मंगल और बुध हों तो मन्त्री, शासक एवं भाग्यशाली, बृहस्पति, मंगल और शुक्र हों तो शास्त्रवेत्ता, चंचल एवं भीरू, बृहस्पति, मंगल और शनि हों तो विवाद में तत्थर, शुक्र बृहस्पति और बुध हों तो यशस्वी, विद्वान, धनिक एवं धर्मात्माः शुक्र, बृहस्पति और शनि हों

तो श्रेष्ठ बक्ता एवं भाग्यशाली, गुरू, शुक्र, बुध और चन्द्रमा हों तो श्रीमान्, पराक्रमी, एवं उद्योगी, सूर्य, मंगल बृहस्पति और शनि हों तो साहसी, पराक्रमी एवं धनिक, शुक्र, मंगल, बृहस्पति और चन्द्रमदा हों तो वीर, सर्वगुणासम्पन्न एवं रसिक तथा बृहस्पति, बुध और चन्द्रमा हों तो जातक यशस्वी एवं भाग्यशाली होता हैं।

सन्दर्भ

1.ज्योतिष चन्द्रिका

2. भारतीय ज्योतिष– आचार्य नेमिचन्द्र शास्त्री

3. ज्योतिष रत्नाकर

4. फल–दीपिका

5. ज्योतिष एवं व्यवसाय– भोजराज द्विवेदी